© 2019 IJSRST | Volume 6 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Engineering
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

भारतीय संस्कृति के संवाहक : महर्षि वाल्मीकि

शोध–निर्देशक
डॉ0 देवनारायण पाठक
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित वि0वि0),
इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

शोधच्छात्रा
संगीता सिंह
संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित वि0वि0),
इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

काव्यतरु पर आरूढ़ होकर जिस प्राचेतस् ब्रह्मविद् आदि कवि महर्षि वाल्मीकि–रूप कोकिल ने राम इन मधुराक्षरों के रटन से साहित्य जगत् को अनुगुंजित किया, वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में महर्षि वाल्मीकि को प्रचेता का दशम पुत्र स्वीकार किया गया है। वह समस्त विद्याओं में निपुण और एक ब्रह्मनिष्ठ महर्षि थे।

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्
आरूह्य कविता शाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्
यः पिबन् सततं रामचरितामृतम् सागरम्
अतृप्तस्तं मुनि वन्दे प्राचेत् समकल्पषम्।।

वाल्मीकि कृत रामायण– प्राचीन इतिहास और आख्यान को धनीभूत शिल्प में एक महाकाव्य में ढल जाने देती है। महर्षि वाल्मीकि की रामकथा भारतीय सभ्यता संस्कृति के समस्त पहलुओं में व्याप्त और प्रवाहमान रही है। अपनी सुदीर्घ इतिहास की अनथक कथा में भारतीय सभ्यता रामकथा के प्रकाश स्तम्भ की भाँति दिशा प्राप्त करती हैं। वाल्मीकि रामायण से लोक को **''रामादिवत् प्रवर्तितव्य न रावणादिवत्''** की शिक्षा मिलती है।

लौकिक संस्कृत में आदि काव्य महाकाव्य रामायण का प्रणयन सर्वप्रथम महर्षि वाल्मीकि के द्वारा ही सम्पन्न हुआ था। पौराणिक मान्यता के अनुसार रामकथा अनादि है क्योंकि इसका स्वरूप शिव भगवान् के मानस में विराजमान है। वाल्मीकीय रामायण में रामायण पाठ की महिमा सनत्कुमार देवर्षिकुमार से पूछते हैं– **''रामायणं केन प्रोक्तं सर्वधर्मफल प्रदम्''** इसके उत्तर में देवर्षि कहते हैं– **''शृणु रामायणं विप्र यद् वाल्मीकिमुखोद्गतम्''**।

इसके प्रत्युत्तर में देवर्षि उन्हें संक्षेप में सम्पूर्ण रामकथा सुना देते हैं। बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में–

मा निषाद प्रतिष्ठात्वमगयः शाश्वती समाः

यत् क्रौं_चमिथुनादेकमवधीः कायमोहितम्।।

इस प्रकार चौबीस हजार श्लोकों में रामायण की संरचना हुई उत्तरकाण्ड की समस्त घटनाओं के वे स्वयं प्रत्यक्षदर्शी थे ही रामायणकालीन शिक्षा का प्रमुख सिद्धान्त सच्चे अर्थों में किसी व्यक्ति का सभ्य, सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत होना उनकी शिक्षा–दीक्षा पर उतना निर्भर नहीं करता जितना उसके जन्मगत स्वभाव तथा संस्कार पर महर्षि वाल्मीकि ने इस बात की परिपुष्टि किया कि कर्म के अनुसार ही व्यक्ति सुख–दुःख, हानि–लाभ प्राप्त करता है। वाल्मीकि जी ने रामायण में उनके स्थानों पर दार्शनिक दृष्टान्त तथा दार्शनिक चिन्तन को उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया है।

महर्षि वाल्मीकि का मूल तत्त्व पवित्र दार्शनिकता के साथ **''कान्तासम्मितयोपदेशः''** को अपनाकर श्रीराम मन्त्र का अनुसरण करके रामचरित का दर्शन करना महर्षि वाल्मीकि की शुद्ध पवित्र सात्त्विकता एवं महत्ता में ही उनकी तपस्या का हेतु है। रामायण काव्य का प्रारम्भ ही तप से ही होता है–

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वागविदांवरम्।

वाल्मीकि का ऐतिहासिक महत्त्व एक या दो हजार वर्षों का नहीं अपितु अरबों वर्षों के इस इतिहास को क्या विकास की कसौटी में कसा जा सकता है। यह प्रश्न केवल एक व्यक्ति विशेष के रूप में नहीं बल्कि इस विस्तृत एवं व्यापक समाज में रामायण महाभारत का महत्त्व युगों–युगों से चला आ रहा है। साथ ही यह धर्म, अर्थ, मोक्ष, परलोक की सुख की प्राप्ति में लाभदायक भी सिद्ध हुआ है।

धर्मार्थ काममोक्षाणामुपदेश समन्वितम्।

पूर्वकृतं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते।।

रामायण में न केवल संस्कृत भाषा का अपितु विश्व की समस्त भाषाओं का प्रथम महाकाव्य है। भाव भाषा शैली समस्त दृष्टि से एक विलक्षण महाकाव्य है। रामायण की कथा में शृंगार, शान्त, करुण, भक्ति, वात्सल्य समस्त रसों का यथोचित प्रयोग किया गया है।

रामायण की मानव संस्कृति साहित्य एवं भारत की विभिन्न संस्कृतियों में स्पष्ट प्रभाव देखा जाता है। महाकवि कालिदास एवं भवभूति लोकभाषा के कवि गोस्वामी तुलसीदास की कृतियों में भी रामायण का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। निःसन्देह रामायण संस्कृत भाषा का नहीं अपितु भारतीय संस्कृति का अनूठा ग्रन्थ है।

महर्षि वाल्मीकि धर्म का पालन करते हुए मानव स्वार्थ से परमार्थ को श्रेष्ठ समझते हुए लोक कल्याण की साधना में रत रहते हैं। महर्षि वाल्मीकि जीवन का अमूल्य कोश–धर्म और सत्य है, जिसके खो जाने पर मनुष्य सर्वथा वृद्ध हो जाता है। हमें जीवनपर्यन्त इसी की वृद्धि करनी चाहिए जो हमें देव की गोद में ले जायेगा।

महर्षि वाल्मीकि ने रामकथा के माध्यम से आर्यों के संघर्ष व त्यागपूर्ण मर्यादित आचरण की परम्परा को व्यक्त किया। आर्यों के साथ–साथ वानर संस्कृति, राक्षस संस्कृति, आज की परम्पराओं का सविस्तार वर्णन प्राप्त

होता है। वाल्मीकि ने आर्य संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का वरण किया। राम उच्च सामाजिक मर्यादाओं के पक्षधर है। वे अपने चरित्र के माध्यम से निजी स्वार्थ की अपेक्षा समाज कल्याण, न्याय व त्याग का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। रामायण असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है। वाल्मीकीय रामायण सदैव शरणागत के लिये प्रेरित करता, श्रीराम ऐसे धर्मात्मन् है जो शरण में आये हुए को दीनतापूर्वक हाथ जोड़कर प्रार्थना करे भले ही वह शत्रु ही क्यों न हो उसे मारने के पक्षधर बिल्कुल नहीं है। धर्मज्ञ पुरुष को अपने प्राणों को देकर भी उसकी रक्षा करनी चाहिये।

अर्तोवा यदि वा दीनः शरणं गतः

अरिः प्राणान् परित्यज्य रक्षितब्य कृतात्यन्।।

रामायण हृदय को स्पर्श करने वाली मस्तिष्क को शान्त रखने वाली आर्य जाति में गौरवपूर्ण उत्तरदायित्व की रक्षा करने वाली बात राम को ऐश्वर्य एवं माधुर्यात्मक चरित्र चित्रावली में ही है।

वास्तव में महर्षि वाल्मीकि के इस ज्ञान विज्ञान भण्डार पर हम भारतीय गर्व कर सकते हैं। भारतवर्ष देवभूमि है, इसी देश में सभी देव–देवी परम तेजस्वी मुनियों की तपोभूमि है। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भारतीय साहित्य में प्रतिपादित जीवन मूल्य ही व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करके मानव की समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। हमारे प्राचीन उपनिषद् (बृहदारण्योपनिष्ज्ञद्) में कहा गया है–

असतो मा सद्गमय

तमसो मा ज्योर्तिगमय

मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण की कथा अपने विस्तृत स्वरूप में एकयुगीन घटना मात्रा को वर्णित नहीं करता वरन् वह मानव सभ्यता, समाज और संस्कृतियों के द्वन्द्व के साथ–साथ नैतिक–अनैतिक, सात्त्विक–असात्त्विक मानव वृत्तियों के द्वन्द्व का भी आख्यान है। रामायण का घटनापरक अध्ययन भले ही मुख्यतः राम–रावण के संघर्ष और इस संघर्ष के कम में आये सह पात्रों और चरित्रों का वर्णन मात्र केन्द्रित हो किन्तु इस ग्रन्थ का मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक और पुरातात्त्विक विवेचन, अपने उद्देश्यों से कहीं अधिक विस्तृत है।

महाकवि वाल्मीकि ने केवल एक उदात्त चरित्र का ही सृजन नहीं किया अपितु सम्पूर्ण संसार के लिये एक आदर्श जीवन बिताने का पथ–प्रदर्शन किया है। इसलिये युगों–युगों से रामायण से प्रभावित होकर विविध काव्यरूपों में रामपरक काव्य रचना होती रहती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. वाल्मीकि रामायण, 1/2/15
3. विष्णुधर्म, 3/18/1
4- वाल्मीकि रामायण, 6/18/28